पल्लव काल - सांस्कृतिक / साहित्य / कला में योगदान

B.A - SEMESTER - III Paper - CC-3

पल्लव राजवंश प्राचीन दक्षिण भारत का एक राजवंश था। चौथी शताब्दी में इसने कांचीपुरम में राज्य स्थापित किया और लगभग 600 वर्षों तक तमिल और तेलुगु क्षेत्र में राज्य किया। यह वंश अपने आप को क्षत्रिय मानता था।

संभवतः यह माना जाता है कि पल्लवों का उदय सातवाहनों के बाद हुआ। पल्लवों का कार्यक्षेत्र दक्षिणी आंध्र और उत्तरी तमिलनाडु था। उनकी राजधानी कांची बनी। प्राकृत भाषा के ताम्रलेखों से पता चलता है कि सिंहविष्णु पल्लव वंश का संस्थापक था।

पल्लवों की प्रशासनिक व्यवस्था

पल्लवों की शासन पद्धति में प्रशासन का केंद्र बिंदु राजा था। राजा को प्रशासन में सहायता देने के लिए मंत्री होते थे। साम्राज्य का विभाजन राष्ट्रों (प्रांतों) में किया गया था। राष्ट्र के प्रमुख अधिकारी को 'विषयिक' कहा जाता था। राष्ट्र 'कोट्टम' में विभाजित था जिसके अधिकारी को 'देशांतिक' कहा जाता है। राजकीय कर एकत्रित करने के लिए एक अधिकारी होता था, जिसे 'मंडपी' कहते थे।

प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। प्रत्येक ग्राम की एक ग्राम सभा होती थी। ग्राम सभा की उपसमितियां होती थी जो उद्यान, मंदिर तालाब इत्यादि का देख-रेख करती थी।

कला / स्थापत्य एवं साहित्य

महेंद्रवर्मन पल्लव शासकों में कला एवं साहित्य की दृष्टि से एक महान शासक था। वास्तुकला की दृष्टि से महेंद्र वर्मन ने गुफा मंडपों का निर्माण कराया। महेंद्र वर्मन ने तोंडमंडलम में शिलाओं को तराश कर गुफा मंडपों के निर्माण की एक नयी परंपरा का प्रारंभ किया।

Scanned with CamScanner

पल्लव काल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। इस काल में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण किया गया। महाबलिपुरम् में रथ मंदिरों का निर्माण किया गया। महाबलिपुरम में 'शोर मंदिर' जैसे विशाल और भव्य मंदिर का निर्माण शुरू किया गया। महेंद्रवर्मन I ने महाबलिपुरम में विशाल ठोस चट्टानों को काटकर मंदिर बनाने की कला की आधारशिला रखी। ये मंदिर प्राचीन स्थापत्य कला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

पल्लव काल के स्थापत्य कला की दो प्रमुख शैली थी। मंडप और रथ। मंडप शैली के उदाहरण हैं - वाराह मंदिर, महिषमंदिर, पंचपांडव मंदिर। रथ शैली के उदाहरण हैं, सप्तपैगोडा मंदिर।

नंदिवर्मन शैली वस्तुतः पल्लव वास्तुकला शैली के अवसान को दर्शाता है।

पल्लव साहित्य

पल्लवों के शासनकाल में कांची शिक्षा का महान केंद्र था। यह माना जाता है कि ह्वेनसांग एवं दिग्नाग ने यहां पर शिक्षा ग्रहण किया था। पल्लव काल में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई।

पल्लव शासक साहित्य प्रेमी थे। पल्लवों की राजधानी कांची साहित्य और संस्कृति का प्रमुख केंद्र थी। संस्कृत भाषा की इस काल में विशेष प्रगति हुई। संस्कृत इस काल की राजभाषा थी। पल्लव शासक सिंहविष्णु ने महाकवि 'भारवि' को अपने दरबार में आमंत्रित किया। पल्लव नरेश महेंद्रवर्मन ने 'मत्तविलास प्रहसन' नामक नाटक लिखा। यह नाटक तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालता है। महेंद्रवर्मन ने 'भागवदज्जुक' भी लिखी। प्रसिद्ध विद्वान 'दंडिन' संभवतः पल्लव शासक नरसिंहवर्मन द्वितीय की राजसभा में थे। दंडिन ने 'दशकुमार चरित' की रचना की। प्रसिद्ध विद्वान मातृदेव भी पल्लवों के राजदरबार में थे।

Scanned with CamScanner

पल्लव काल में जनजीवन / धर्म और आर्थिक अवस्था

यद्यपि इस काल में पल्लव शासक युद्धों में व्यस्त रहे (विशेष तौर पर चालुक्यों के साथ)। फिर भी धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में कोई बाधा नहीं आई। पल्लव काल में वैष्णवाद का पुनरुत्थान हुआ जिसके फलस्वरूप भक्ति साहित्य और संगीत का विकास हुआ। राजा वैष्णव धर्म मानते थे और वैदिक यज्ञ करते थे। राजाओं ने 'धर्म महाराजा' जैसी उपाधि धारण की। उन्होंने अपने राज्य में शांति बनाये रखना अपना कर्तव्य समझा।

आर्थिक व्यवस्था में कृषि उत्पादन के लिए नये तरीके काम में लाये गये। तमिल अभिलेखों से इस काल में तीन ग्रामों की जानकारी होती है, वे थी - उर, सभा और नगरम। 'उर' सभा में वे लोग शामिल थे, जिनकी गांव में अपनी भूमि थी। नगरम के सदस्य व्यापारी और दुकानदार थे।

ग्रामीण व्यवस्था और विस्तार के पट्टे प्रमाण साबित करते हैं कि कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए बहुत प्रयास किये गये।

यद्यपि प्रारंभ में बौद्ध और जैन धर्म अति लोकप्रिय था फिर भी इस काल में शिव और विष्णु के मंदिरों का निर्माण किया गया।

इस काल में दक्षिण में इतने अधिक मंदिरों का निर्माण हुआ कि दक्षिण को 'मंदिरों का प्रदेश' कहा जाने लगा। इसी काल में भारतीय संस्कृति तमिल देश से दक्षिण-पूर्वी एशिया पहुंची।

पल्लवों का सांस्कृतिक प्रभाव इंडोनेशिया और इंडोचीन तक पहुंचा था। पल्लव राजाओं का शासनकाल 'नयनारों' तथा 'अलवारों' के भक्ति आंदोलनों के लिए प्रसिद्ध रहा।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि पल्लवों को विशेष रूप से सांस्कृतिक, साहित्य, कला और दक्षिण भारत के पुरातात्विक इतिहास में इनके योगदान के लिए हमेशा याद किया जाता है।

Rajesh Kumar Singh, Asst. Prof. (History) D.S.P.M.U.

Scanned with CamScanner